No 94 S. ALAM NASHARAH (OR INSHIRAH) (12) (OPENED UP THE HEART)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 8 WORDS 27, LETTERS 103

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 (O Messenger! Muhammad Mustafa Sal Lal Laahu 'Allehi Wa Sallam) Have WE not opened up your heart for you?

2 And eased your burden too.

3 Which had weighed heavily on your back.

4 And exalted your fame.

5 So, indeed, with every difficulty there is a relief.

नं॰ 94 सूरह अलम् नश् रह्
(या इन्शिरह्) (12)
(सीना खोल दिया)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 8, लफ़्ज़ 27, हरूफ़ 103

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 (ऐ पैग़म्बर! मुहम्मद मुस्तफ़ा सल् लल् लाहु अ़लैहि व सल्लम) क्या हमने आपका सीना आपके लिये खोल नहीं दिया?

2 और आप पर से भारी बोझ भी उतार दिया.

3 जो वज़न से आपकी कमर तोड़े डाल रहा था.

4 और आपका ज़िक्र बुलंद किया.

5 तो बेशक़, हर मुश्किल के साथ आसानी है.

नं.94 सूरातु अलम् नश् रह्
(इन्शिरह्) (12)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 8,
लफ़्ज़ 27, हरूफ़ 103

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ०

1 अलम् नश् रह् लाका सद् रक् ०

2 व वज़ज़्नाा अ़न्का विज़् रक् ०

3 अल् लज़ीी अन् क़ाज़ा जह् रक् ०

4 व राफ़ाअ़्नाा लाका जिक् रक् ०

5 फ़ इन्ना मअ़ल् अुस्रि युस्रा ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝

٢- وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝

٣- الَّذِىْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝

٤- وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝

٥- فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝

6 And indeed with every difficulty there is a relief.

7 So when you are free from your Tableeghee tasks, then still labour hard (in the remembrance of ALLAH).

8 And turn to your RABB with all your devotion.

6 और बेशक़ हर मुश्किल के साथ आसानी है.

7 तो (ऐ पैग़म्बर!) जब आप अपने तब्लीग़ के कामों से फ़ुरसत पाया करें तो अल्लाह की इबादत महनत से किया कीजिये.

8 और अपने रब की तरफ़ दिल से लौ लगाया कीजिये.

6 इन्ना मअ़ल अ़ुसरि युस्रा ۶ ۰

٦-اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝

7 फ़ इज़ा फ़रग़ता फ़न्सब् ۷ ۰

٧-فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝

8 व इला रब्बिका फ़र्ग़ब् ۸ ۰

٨-وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

No 95 SURAH TEEN (28)

(THE FIG)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 8
WORDS 34, LETTERS 165

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 I (i.e. ALLAH) swear by the fig and by the olive

2 And by the mout Sinai

3 And by this city (of Mecca) which is of peace and of security.

4 That WE have indeed created man in the best of moulds.

5 Then WE brought him down to the lowest of the low.

नं. 95 सूरह् तीन (28)

(अंजीर)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 8
लफ़्ज़ 34, हरूफ़ 165

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायते रहम वाला है.

1 मुझे (यानी अल्लाह को) अंजीर की क़सम और ज़ैतून की.

2 और (पहाड़) तूरे सीनीन की क़सम.

3 और इस अमन वाले शहर (मक्का) की.

4 के हमने इंसान को बहुत ख़ूब सूरत सांचे में ढ़ाला है.

5 फ़िर हमने उसे नीचे से नीचे तबके वालों में फ़ेंक दिया.

नं. 95 सूरा तुत् तीन (28)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 8,
लफ़्ज़ 34, हरूफ़ 165

बिस् मिल्लाा हिर् रह्मा
निर् रहीम ○

1 वत्तीं नि वज़् ज़ैतून ○

2 व तूरि सीनीन ○

3 व हाज़ल् बाला दिल् अमीन ○

4 लक़द् खलक़ नल् इन् साना
फ़ीं अह् सनि तक़् वीम ○

5 सुम्मा रदद् नाहु अस् फ़ाला
साफ़िलीन ○

سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ (٢٨) رکوعها ١ آیات ٨ کلماتها ٣٤ حروفها ١٦٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝

٢- وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝

٣- وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝

٤- لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝

٥- ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝

6 Except those who believe and do right deeds. For they shall have a reward unfailing.

6 मगर जो लोग ईमान लाये और नेक आमाल करते रहे उनके लिये कभी ना ख़त्म होने वाला इनाम है.

7 Then after this (O Man!) what makes you to deny the Day of Judgement?

7 तो (ऐ इंसान!) इसके बाद और वो कौन सी चीज़ है जिस वजह से तू क़ियामत को झुठलाता है?

8 Is ALLAH not the most just of all the judges?

8 क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है?

6 इल्लल्लज़ीना आमनू व अ़मिलुस् सालिहाति फ़ाला हुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून ५८	۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝
7 फ़मा यु कज़्ज़िबुका बअ़्दु बिद्दीन ५	۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ۝
8 अलै सल्लाहु बि अह्कमिल् हाकिमीन ६०	۝ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ۝

No 96 SURAH ALAQ (OR IQRA) (1)

MAKKI, RUKU 1, AYAT 19
WORDS 72, LETTERS 290

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Read, in the name of your RABB, who created (the world).

2 WHO created man from a (mere) clot of blood.

3 Read, for your RABB is Most Bountiful.

4 (H is) HE, WHO taught by the pen.

5 WHO taught man that knowledge which he did not know.

6 But no, man is rebellious.

7 And he thinks himself as self sufficient.

8 Surely (man is mistaken) and to your RABB is the return of you all.

नं. 96 सूरह् अलक़ (या इक़्रा) (1)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 19
लफ़्ज़ 72, हरूफ़ 290

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 पढ़िये, (ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल् लल् लाहु अ़लैहि व सल्लम) अपने रब का नाम लेकर, जिसने (दुनिया को) पैदा किया.

2 जिसने इंसान को ख़ून के (यानी नुत्फ़े) के एक दाग़ से पैदा किया.

3 पढ़िये, के आपका रब बड़ा करीम है.

4 वो ही जिसने क़लम के ज़रिये इल्म सिखाया.

5 जिसने इंसान को वो इल्म दिया जिसे वो नहीं जानता था.

6 मगर नहीं, इंसान तो सरकशी करता है.

7 और वो अपने आपको बे निय़ाज़ (यानी खुद मुख़्तार और बग़ैर मददगार) समझता है.

8 बेशक़ (इंसान भूल में है और अल्लाह का मुहताज है) और उसे अपने रब की तरफ़ लौट कर जाना है.

नं. 96 सूरा तुल् अ़लाक़ि

(1)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 19
लफ़्ज़ 72, हरूफ़ 290

बिस् मिल्लाा हिर् रह्मा निर् रहीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 अिक़् रअ् बिस्मि रब्बि कल् लज़ी ख़लक़ ० ١- اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ ۝

2 ख़ला क़ल् इन्सानाना मिन् अ़लक़ ० ٢- خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝

3 अिक़् रअ् व रब्बु कल् अक़् रम् ० ٣- اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝

4 अल् लज़ी अ़ल्लमा बिल् क़लम् ० ٤- الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝

5 अ़ल्ला मल् इन्सानाना मालम् यअ़् लम् ० ٥- عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝

6 कल्लाा इन्नल् इन्सानाना ल यत्ग़ा ० ٦- كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۝

7 अर् रआ हुस् तग़्ना ० ٧- اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۝

8 इन्ना इला रब्बि कर् रुज्अ़ा ० ٨- اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۝

9 Have you seen him who dissuades others!

10 When a devotee stands to pray.

11 Have you thought if he (i.e. Chief of Quresh Tribe - Abu Jahl) was also on the right path.

12 Or had he enjoined righteousness on others.

13 Have you thought (of the consequences) if he denies (the truth) and turns away.

14 Does he not know that ALLAH is seeing (him)?

15 Let him be warned that if he does not desist WE will drag him by the forelock.

16 By his lying sinful forelock.

17 Then let him call his associates for help.

18 WE shall also call our guards (angels) of hell for his punishment.

19 No, you people do not obey him, but bow down to ALLAH, and bring yourself closer to ALLAH.

(DO SAJDA TILAWAT)

9 क्या आपने उस शख़्स को देखा है जो दूसरों को मना करता है?

10 जब एक अक़ीदत् मंद नमाज़ पढ़ने को उठता है.

11 भला सोचो तो अगर ये (क़ुरैश क़बीले का सरदार - अबु जहल्) भी सीधे रास्ते पर होता.

12 या वो औरों को परहेज़ गारी सिखाता.

13 और देखो तो अगर वो दीने हक़ को झुठलाता है और उससे मूं मोड़ता है (तो उसका क्या अंजाम होगा)

14 क्या उसे मालूम नहीं के अल्लाह उसे देख रहा है?

15 देखो! अगर वो बाज़ नहीं आयेगा तो हम (यानी अल्लाह) उसे उसके पेशानी के बालों के बल घसीटेंगे.

16 उसके झूठे गुनहगार पेशानी के बालों के बल.

17 तो फिर वो अपने साथियों को अपनी मदद के लिये बुला ले.

18 तो हम भी (यानी अल्लाह) दोज़ख़ के दारोग़ा (फ़रिश्ते) उसकी सज़ा के लिये बुला लेंगे.

19 नहीं, तुम लोग उसका कहना ना मानना बल्के अल्लाह को सज्दा करना, और अल्लाह के क़रीब होना.

(सज्दा तिलावत कीजिये)

9 आरा अै तल् लज़ी यन्हा ॥ ०

९- أَرَءَيْتَ الَّذِى يَنْهَىٰ ۝

10 अ़ब्दन् इज़ा स़ल्ला ऽ ०

١٠- عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۝

11 आरा अैता इन् काना अ़लल् हुदा ॥ ०

١١- أَرَءَيْتَ إِن كَانَ عَلَى ٱلْهُدَىٰٓ ۝

12 औ आमारा बित् तक़्वा ऽ ०

١٢- أَوْ أَمَرَ بِٱلتَّقْوَىٰٓ ۝

13 आरा अैता इन् कज़्ज़बा वाता वल्ला ऽ ०

١٣- أَرَءَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰٓ ۝

14 अलम् यअ़्लम् बि अन् नल् लाहा यरा ऽ ०

١٤- أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ ٱللَّهَ يَرَىٰ ۝

15 कल्ला ल इल्लम् यन् तहि ॥ ० ल नस्फ़ा अ़म् बिन् नासि़ यह् ०

١٥- كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ ۝ لَنَسْفَعًۢا بِٱلنَّاصِيَةِ ۝

16 नासि़ यतिन् काज़िब बतिन् ख़ातिअ़ अह् ८ ०

١٦- نَاصِيَةٍ كَٰذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝

17 फ़ल् यद्अु नादि यह् ॥ ०

١٧- فَلْيَدْعُ نَادِيَهُۥ ۝

18 सनद् अुज़् ज़बानि यह् ॥ ०

١٨- سَنَدْعُ ٱلزَّبَانِيَةَ ۝

19 कल्ला ऽ ला तुतिअ़् हु वस् जुद् वक़् तरिब् ९ ०

١٩- كَلَّا ۚ لَا تُطِعْهُ ۩ وَٱسْجُدْ وَٱقْتَرِب ۩ ۝

(सज्दा तिलावत)

No 97 SURAH QADR (25)
(THE NIGHT OF POWER AND HONOUR)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 5
WORDS 30, LETTERS 115

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 WE have indeed commenced revealing the Qur'aan from the Night of Power.
2 And what will explain to you what the Night of Power is?
3 The Night of Power is better than thousand months (83 years 4 months)

4 On this night the angels and the Spirit (i.e. Jibreel 'Allehis Salaam) descend by the permission of their RABB to settle all affairs on earth.
5 (That night is all) peace till the rising of the dawn.

नं॰ 97 सूरह् क़द्र (25)
(बड़ी क़द्रो मंज़लत वाली रात)

मक्की, रुकूअ़ 1 आयात 5
लफ़्ज़ 30, हरूफ़ 115

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हमने (यानी अल्लाह ने) इस क़ुरआन को शबे क़द्र से उतारना शुरू किया.

2 और तुम्हें क्या मालूम के शबे क़द्र क्या है?

3 शबे क़द्र हज़ार महीनों से बढ़ कर है. (यानी 83 साल और 4 महीने).

4 इस रात में फ़रिश्ते और रूहुल अमीन (यानी फ़रिश्ते रूहुल अमीन) अपने रब के हुक्म से (हर काम के इंतज़ाम के वास्ते) ज़मीन पर उतरते हैं.

5 (उस रात) सलामती की है - सुबह की पौ फ़टने तक.

तीन चौथाई

नं॰ 97 सूरा तुल क़द्रि (25)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 5
लफ़्ज़ 30, हरूफ़ 115

बिस्मिल्लाहिर रह्मानिर रहीम ०

1 इन्नाअन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलातिल क़द्र ०

2 वमाअद्राका मा लैलातुल क़द्र ०

3 लैलातुल क़द्रि ख़ैरुम मिन अल्फ़ि शह्र ०

4 तनज़्ज़लुल मलाइकतु वर रूहु फ़ीहा बिइज़्निरब्बिहिम मिन कुल्लि अम्र ०

5 सलामुन हिया हत्ता मत्ला ज़िल फ़ज्र ०

अस सलासा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝

٢- وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝

٣- لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝

٤- تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝

٥- سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

No 98 SURAH BAYYINAH (CLEAR PROOF) (100)

MADANI, RUKU 1, AYATS 8
WORDS 95, LETTERS 413

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Those who believe among the people of the Scriptures (i.e. Jews and Christians) and the idolators would not have stopped them-selves from false beliefs until the clear proof came to them.

2 And that is - that a Messenger should come to them reading the pure and holy pages.

3 Containing the firm instructions.

4 And the people of the Scripture (i.e. Jews and Christians) got divided among themselves only after the arrival of a clear proof of Qur'aan.

5 They were commanded (through Qur'aan) only to worship-

नं. 98 सूरह् बय्यि नह् (100) (खुली दलील)

मदनी, रुकूअ़ 1, आयात 8
लफ़्ज़ 95 हरूफ़ 413

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जो लोग किताब वालों में से हैं और शिर्क करने वालों में से काफ़िर हैं वो कुफ़्र से बाज़ आने वाले ना थे जब तक के उनके पास खुली दलील ना आ जाती.

2 याने के कोई पैग़म्बर उनके पास आये जो पाक सहीफ़ों को पढ़ कर सुनाये.

3 जिनमें मज़बूत (पक्के) अह्का मात (आयात) लिखे हों.

4 और वो अह्ले किताब (यानी यहूदी और ईसाई) क़ुरआन मजीद की खुली दलील आने के बाद ही तो आपस की फ़ूट में पड़े हैं.

5 और उनको (क़ुरआन ने) ये ही हुक्म दिया है के अल्लाह ही की सच्चे —

नं॰ 98 सूरा तुल् बय्यि नति
(100)

मदनी, रुकूअ़ 1, आयात 8
लफ़्ज़ 95 , हरूफ़ 413

बिस् मिल्लाा हिर् रह्मा
निर् रहीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 लम् यकु निल् लज़ीना काफ़रू
मिन् अह् लिल् किताबि वल्
मुश्रि कीना मुन् फ़क्कीना हत्ता
तअ् तिया हुमुल् बय्यि नह् ५०

١- لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ
حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۙ

2 रसू लुम् मिनल् लाहि यत्लू
सुहु फ़म् मुत्ह हरह् ५०

٢- رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ
يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ

3 फ़ीहा कुतु बुन् क़य्यि मह् ५०

٣- فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۙ

4 वमा त फ़र्र क़ल् लज़ीना ऊतुल्
किताबा इल्ला मिम् बअ़्दि मा
जाअत् हुमुल् बय्यि नह् ५०

٤- وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۙ

5 वमा ऊमिरू इल्ला लि यअ्
बुदुल् लाहा मुख़्लि सीना ...

٥- وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا
لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ

ALLAH with all exclusive faith in HIM, to be upright in faith, to establish regular prayer and to give regular Zakat. And that is the religion right and straight.

दिल से इबादत करें और यकसू होकर नमाज़ पढ़ें, और बाक़ायदा ज़कात दें. और ये ही सीधा सच्चा दीन है.

6 Surely the Disbelievers who are among the People of the Book and from among the idolators will abide in the Fire of Hell. For they are the worst of the creatures.

6 अहले किताब में से और बुत परस्तों में से जो लोग काफ़िर ही रहे तो वो दोज़ख़ की आग में जायेंगे. और हमेशा के लिये उसी में पड़े रहेंगे. ये लोग सब मख़लूक़ों से बद्तर हैं.

7 But those who have faith and who do good deeds are surely the best of creatures.

7 लेकिन जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, बेशक़ वो तमाम मख़लूक़ से बेहतर हैं.

8 Their reward is with ALLAH. They will live in Gardens of Eternity with rivers flowing by. They will dwell there for ever. ALLAH well pleased with them and they with HIM. This awaits them who fear their RABB.

8 उनका बदला उनके रब के पास है जहां उनके लिये जन्नत के बाग़ात हैं - जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी - जिनमें वो हमेशा हमेशा रहेंगे. अल्लाह उनसे ख़ुश और वो अल्लाह से ख़ुश. ये उनके लिये बदला होगा जो अल्लाह से हर वक़्त डरते हैं.

ल हुद् दीना ॥ ५ हुना फ़ाआ
व युक़ीमुस् सलाता व युअ् तुज़्
ज़कात़ा व जालिका दीनुल्
क़य्यि मह् ५ ०

6 इन्नल् लज़ीना काफ़रू मिन्
अह् लिल् किताबि वल् मुश्रिकीना
फ़ी नारि जहन्नमा ख़ालिदीना फ़ीहा ६
उलाआ इका हुम् शर् रुल् बरिय्
यह् ५ ०

7 इन्नल् लज़ीना आमनू व अमि
लुस् सालिहाति ॥ उलाआ
इका हुम् ख़ैरुल् बरिय् यह् ५ ०

8 जज़ाउ हुम् अिन्दा रब्बि
हिम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री
मिन् तह्ति हल् अन् हारु
ख़ालिदीना फ़ीहा आबादा ६
रज़ि यल् लाहु अन् हुम् व रज़ू
अन्ह् ६ जालिका लि मन्
ख़शिया रब्बह् ६ ०

حُنَفَآءَ وَيُقِيمُوا الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ
وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝

٦- اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ
فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝

٧- اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ
اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝

٨- جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ
ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝

No 99 SURAH ZIL ZAAL
(THE CONVULSION) (93)

MADANI, RUKU 1, AYATS 8
WORDS 37, LETTERS 158

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 When the earth is shaken up by the deadly convulsion.

2 And the earth will throw out its burden from with in it.

3 And the man will cry out: What is the matter with her?

4 That Day she will declare whatever had happened on her.

5 Because your RAB would have asked her to do so.

6 That Day men will proceed in separate groups to be shown their deeds to them.

नं. 99 सूरह ज़िल ज़ाल
(ज़ल ज़ले का झटका) (93)

मदनी, रुकूअ़ 1, आयात 8
लफ़्ज़ 37, हरूफ़ 158

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायते रहम वाला है.

1 जब (क़ियामत बरपा होगी और) ज़मीन ज़ल ज़ले के झटके से हिला कर रख दी जायेगी.

2 और ज़मीन अपने अंदर से अपना सारा बोझ बाहर निकाल फेंकेगी.

3 और इंसान चीख़ उठेगा के इसे क्या हो गया है?

4 उस दिन वो अपने पर बीती सब ख़बर सुनायेगी.

5 क्योंके तुम्हारे रब ने उसे ऐसा ही हुक्म भेजा होगा.

6 उस दिन लोग अलग अलग गिरोहों में (अपने आमालों के मुताबिक) होकर आयेंगे ताके उनको आमाल के हिसाब दिखा दिये जांये.

नं. 99 सूरा तुज़् ज़िल् ज़ालि

(93)

मदनी, रुकूअ़ 1, आयात 8
लफ़्ज़ 37 हरूफ़ 158

बिस् मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

سُوْرَةُ الزَّلْزَلَةِ مَدَنِيَّةٌ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 इज़ा ज़ुल् ज़िला तिल् अर्ज़ु ज़िल् ज़ा लहा ○

١- اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۙ

2 व अख़् राजा तिल् अर्ज़ु अन्स् क़ा लहा ○

٢- وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۙ

3 व क़ालल् इन्सानु मा लहा ○

٣- وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ

4 यौमा इज़िन् तु हद् दिसु अख़्बा रहा ○

٤- يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۙ

5 बि अन्ना रब्बका औहा लहा ○

٥- بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۙ

6 यौमा इज़िंय् यस्दुरुन् नासु अश् ताताल् लि युरौ अअ्माला हुम् ○

٦- يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۙ

7 Then whosoever has done even an atoms weight of good will see it.
8 And whosoever has done even an atom's weight of evil will also see it.

7 तो जिसने ज़र्रा बराबर भी नेकी की होगी वो उसे देख लेगा.

8 और जिसने ज़र्रा बराबर भी बुराई की होगी वो (भी) उसे देख लेगा.

NO 100 SURAH 'AADIYAAT (THE CHARGING HORSES) (14)
MAKKI, RUKU 1, AYATS 11
WORDS 40, LETTERS 170

नं. 100 सूरह आदि यात (14) (तेज़ दौड़ने वाले घोड़े)

मक्की, रुकूअ 1, आयात 11
लफ़्ज़ 40, हरूफ़ 170

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

अल्लाह के नाम से शुरु करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 I (i.e. ALLAH) swear by the (battle) horses which out run each other with snorting breath.
2 And who strike sparks of fire (from their hooves)

3 And who burst out to charge early in the morning.
4 Raising clouds of dust.

5 Thus penetrating forthwith deep (into the enemy armies)

1 मुझे (यानी अल्लाह को) क़सम उन (जंगी) सरपट दौड़ने वाले घोड़ों की, जो दौड़ में एक दूसरे से आगे जाने में हांप उठते हैं.
2 और जो (पत्थरों पर नाल मारकर) आग की चिनगारियां निकालते हैं.

3 और जो अलत् सुबह् जाकर धापा जा मारते हैं.

4 और जो धूल के बादल उड़ा डालते हैं.

5 और इस तरह (दुश्मन की) फ़ौजों में जा घुसते हैं.

7 फ़ मंय् यअ़् मल् मिस्क़ाला जर्रतिन् खैरंय् यरह् ७०	٧- فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝
8 व मंय् यअ़् मल् मिस्क़ाला जर्रतिन् शर् रंय् यरह् ८०	٨- وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝
नं॰ 100 सूरा तुल् आदि याति (14)	سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ
मक्की, रुकूअ़् 1, आयात 11 लफ़्ज़ 40, हरूफ़ 170	
बिस् मिल्ला हिर् रह्मा निर् रहीम ०	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
1 वल् आदि याति ज़ब्हा ॥०	١- وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝
2 फ़ल् मूरि याति क़द्हा ॥०	٢- فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝
3 फ़ल् मुग़ीरि याति सुब्हा ॥०	٣- فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝
4 फ़ अस्रना बिही नक़्आ ॥०	٤- فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝
5 फ़ावस़ा सत्ना बिही जम्आ ॥०	٥- فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝

6 Truly man is ungrateful to his RABB.
7 And to that fact, he himself is a witness (by his deeds).
8 And he is extreme in his love of worldy goods.
9 Does he not know (about the Day) when the contents of the grave would be laid bare open.
10 And the secrets of the hearts would be exposed.
11 Surely that Day their RABB would be well aware of all their deeds.

6 बेशक़ इंसान अपने रब का ना शुक्रा है.
7 और वो ख़ुद (अपनी हरकतों से) इसका गवाह है.
8 और वो माल और दौलत की मुहब्बत में बुरी तरह मुबतला है.
9 तो क्या वो उस क़ियामत के वक़्त को नहीं जानता, जबके वो जो क़ब्रों में है, निकाल कर ज़ाहिर कर दिये जायेंगे.
10 और दिलों के भेदों को ज़ाहिर कर दिया जायेगा.
11 बेशक़ उस दिन उनका रब उनके सारे आमाल से ब ख़ूबी बा ख़बर होगा.

NO 101 SURAH AL-QAARIAH (THE DAY OF TREMENDOUS CALAMITY) (30)

नं. 101 सूरह् अल् क़ारिआह् (30) (अ़ज़ीम ह़ादसे वाला दिन)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 11
WORDS 35, LETTERS 160

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 11
लफ़्ज़ 35 हरूफ़ 160

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

अल्लाह् के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 The Day of Tremendous Calamity!
2 And what is that Day of Tremendous Calamity?

1 अ़ज़ीम हादसे वाला दिन!
2 और क्या है वो अ़ज़ीम हादसे वाला दिन.

6 इन्नल् इन्सानाना लि रब्बि हीं ल कनूद ८ ०

٦- إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝

7 व इन्नहू अ़लाा जालिका ल शहीद ८ ०

٧- وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝

8 व इन्नहू लि हुब्बिल् ख़ैरि ल शदीद ८ ०

٨- وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝

9 आफ़ालाा यअ़् लमु इज़ा बुअ़् सिरा माा फ़िल् क़ुबूर ॥ ०

٩- أَفَلَا يَعْلَمُ
إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝

10 व हुस् सिला माा फ़िस् सुदूर ॥ ०

١٠- وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝

11 इन्ना रब्बा हुम् बि हिम् यौमा इज़िल् ल ख़बीर ९ ०

١١- إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ۝

नं. 101 सूरा तुल् क़ारिअ़ति (३०)

سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 11
लफ़्ज़35, हरूफ़ 160

बिस्मिल्लाा हिर् रह्माा निर् रहीम ०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1 अल् क़ारिअ़ह् ॥ ०

١- الْقَارِعَةُ ۝

2 मल् क़ारिअ़ह् ८ ०

٢- مَا الْقَارِعَةُ ۝

3 And how can you comprehend what is the Day of Tremendous Calamity?
4 It is a Day when human beings would be like thickly scattered moths.
5 And the mountains would become as tufts of carded wool.
6 Then he whose deeds (of good works) will weigh heavier in the scale.
7 He will have a good life with peace.
8 But he whose deeds (of good works) will weigh lighter in the scale.
9 He will have his home in 'Haaviya'.

10 And what will convey to you what 'Haawiya' is?
11 That is the raging fire of hell.

3 और तुमको क्या मालूम के
अज़ीम हादसे वाला दिन क्या चीज़ है?

4 ये अज़ीम हादसे वाला दिन वो दिन
है जब इंसान-बहुत से पतंगों की तरह
बिखरे हुए होंगे.
5 और पहाड़ रंग बिरंग की धुनी हुई
ऊन के गाले के मानिन्द हो जायेंगे.

6 तो जिसके (नेक) आमाल के
वज़न का पल्ला भारी होगा.

7 तो वो आराम और सुकून की ज़िंदगी
में होगा.
8 और जिसके (नेक) आमाल का
पल्ला वज़न में हल्का होगा.

9 तो उसका ठिकाना 'हाविया'
में होगा.

10 और तुमको क्या मालूम के
'हाविया' क्या चीज़ है.?
11 वो दोज़ख की दहकती हुई आग है.

3 वमा अद् राका मल् क़ारि अ़ह् ؕ	٣- وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ؕ
4 यौमा यकू नुन् नासु कल् फ़राशिल् मब् सूस ؕ	٤- يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ؕ
5 व तकू नुल् जिबालु कल् अ़िह् निल् मन् फ़ूश ؕ	٥- وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ؕ
6 फ़ अम्मा मन् सक़ु लत् मवाज़ीनुह् ؕ	٦- فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ؕ
7 फ़ हुवा फ़ी अ़ीशा तिर् राज़िय़ह् ؕ	٧- فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ؕ
8 व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुह् ؕ	٨- وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ؕ
9 फ़ उम्मु हू हावि यह् ؕ	٩- فَأُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ؕ
10 वमा अद् राका माहि यह् ؕ	١٠- وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ؕ
11 नारुन् ह़ामि यह् ؕ	١١- نَارٌ حَامِيَةٌ ؕ

No 102 SURAH TAKAASUR (16)

(RIVALRY IN PILING UP OF WORLDLY GOODS)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 8
WORDS 28, LETTERS 123

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 The rivalry in piling up (of wordly goods) keeps you diverted (from the more serious things of life).
2 Till you would reach the grave.
3 But no, you will soon come to know (the reality).
4 But, again no, you will soon come to know the reality.
5 But no, if you knew with a certainty of your mind (then your behaviour would not have been like this).
6 For, you will certainly see Hell Fire.
7 Certainly, then you will see it with the surety of your vision.

नं. 102 सूरह् तकासुर (16)

(मालो दौलत समेटने की होड़)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 8
लफ़्ज़ 28, हरूफ़ 123

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 तुम लोगों को दुनिया (के मालो दौलत) समेटने की आपस की होड़ ने (दूसरी ज़्यादा अहम चीज़ों से ग़ाफिल कर रखा है).
2 यहां तक के तुम क़ब्र में ही जा पहुंचोगे.
3 लेकिन नहीं. तुम्हें जल्द ही (हक़ीक़त) मालूम हो जायेगी.
4 और फिर दुबारा नहीं. तुम्हें जल्द ही (हक़ीक़त) मालूम हो जायेगी.
5 लेकिन नहीं, अगर तुम्हें यक़ीनी तौर पर इस (रविश के अंजाम) का ज़िल्म होता (तो तुम्हारा ये तर्ज़े अमल ना होता.
6 तो तुम ज़रूर दोज़ख़ की आग को देखोगे.
7 हां, तुम बिलकुल यक़ीनी आंखों से (यानी यक़ीनी तौर से) उसे देखोगे

नं॰102 सूरा तुत् तकाा सुरि
(16)

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ (١٦)

मक्की, रुकूअ 1, आयात 8
लफ़्ज़ 28, हरूफ़ 123

बिस् मिल्लाा हिर् रह्माा निर् रहीम ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 अल् हाकु मुत् तकाा सुर् ⸗○

١- اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ

2 हत्ताा ज़ुरतु मुल् मक़ाा बिर् ⸗○

٢- حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۗ

3 कल्लाा सौफ़ा तअ्लमून ⸗○

٣- كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ

4 सुम्माा कल्लाा सौफ़ा तअ्लमून ⸗○

٤- ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ

5 कल्लाा लौ तअ्लमूना अिल्मल् यक़ीन ⸗○

٥- كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۙ

6 लातारा वुन्नल् जहीम ⸗○

٦- لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۙ

7 सुम्माा लातारा वुन्नहाा अैनल् यक़ीन ⸗○

٧- ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۙ

8 That Day then you would be questioned about the joys (you had indulged in).

8 उस रोज़ फ़िर तुमसे (दुनिया में तुम्हें दी हुई) निअ़मतों के बारे में जवाब तलबी की जायेगी.

NO 103 SURAH 'ASR (13)
(PASSAGE OF TIME THROUGH AGES)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 3
WORDS 14, LETTERS 74

नं. 103 सूरह् अ़स्र (13)

(वक़्त का ज़मानों से गुजरना)
मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 3
लफ़्ज़ 14, हरूफ़ 74

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

अल्लाह के नाम से शुरु करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 I (i.e. ALLAH) swear by the Time.

1 मुझे (यानी अल्लाह को) वक़्त की क़सम.

2 That - man is certainly is in a loss.

2 के - बेशक़ इंसान ख़सारे में है.

3 Except those who believe and do good deeds and exhort one another to patience.

3 लेकिन वो नहीं - जो ईमान ले आये और जो नेक अ़मल करते रहे और जो आपस में एक दूसरे को हक़ की वसीयत और आपस में एक दूसरे को सब्र की वसीयत करते रहे.

8 सुम्मा ल तुस् अलुन्ना यौमा
इज़िन् अ़निन् नअ़ीम ९ ०

٨ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝

नं.103 सूरा तुल अ़स्रि (13)

سُورَةُ العَصْرِ مَكِّيَّةٌ

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 3
लफ़्ज़ 14, हरूफ़ 74

बिस् मिल्लाहिर रह्मानिर् रहीम ०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

1 वल् अ़स्र ॥ ०

١ - وَالْعَصْرِ ۝

2 इन्नल् इन्सा़ना लफ़ी ख़ुस्र् ॥ ०

٢ - إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝

3 इल् लल् लजीना आमनू व अ़मिलुस् स़ालि ह़ाति वाता वासौ बिल् ह़क़्क़ि ॥ वाता वासौ बिस् सब्र् ९ ०

٣ - إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ
وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

No 104 SURAH HUMAZAH

(THE SLANDERER AND BACK BITER) (32)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 9
WORDS 33, LETTERS 135

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL

1 Woe to every slanderer and back biter.

2 Who amasses wealth, keeps counting it and hoards it.

3 And he thinks that his wealth will last with him for ever.

4 By no means. He will be thrown into 'HUTAMAH' (i.e. the blazing fire of Hell).

5 And how will you comprehend what 'HUTAMAH' is?

6 It is the Fire kindled by ALLAH.

7 Which will reach upto the heart.

8 And it will encircle them from all sides.

9 In the columns of high flames.

नं. 104 सूरह् हुमाज़ा (32)

(ताना देने वाला- चुग़ल ख़ोर)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 9
लफ़्ज़ 33, हरूफ़ 135

अल्लाह् के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है-

1 ताना देने वाले की (यानी बुराई करने वाले की) और चुग़ल ख़ोर की तबाही है.

2 जो दौलत जमा करता है और उसे गिन गिन कर इक्ठ्ठा करता रहता है.

3 और वो समझता है के उसका माल उसका हमेशा साथ देगा.

4 हरगिज़ नहीं, वो ज़रूर 'हुतामह' में (यानी दोज़ख़ की भड़कती आग में) डाला जायेगा.

5 और तुम्हें क्या मालूम के 'हुतामह' क्या चीज़ है?

6 वो अल्लाह की भड़काई हुई आग है.

7 जो दिलों तक पहुंचेगी.

8 और वो उन्हें हर तरफ़ से घेरलेगी.

9 आग के ऊंचे ऊंचे-सुतूनों की तरह के शोलों में.

नं॰ 104 सूरा तुल् हुमा ज़ति (32)

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ ٣٢

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 9
लफ़्ज़ 33, हरूफ़ 135

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 वैलुल्लिकुल्लिहुमा ज़तिल् लुमा ज़ह् ○

١- وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ

2 अल् लज़ी जमाअ़ा मालंव् व अ़द्दा दह् ○

٢- الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّ عَدَّدَهٗ ۙ

3 यह् सबु अन्ना मा लहू अख़्ला दह् ○

٣- يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۚ

4 कल्ला ल युम्बा जन्ना फ़िल् हुत़ा मह् ○

٤- كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۖ

5 वमा अद् राका मल् हुत़ा मह् ○

٥- وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۙ

6 ना रुल्लाहिल् मूक़ा दह् ○

٦- نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ

7 अल् लती तत्त़ा लिअु अ़लल् अफ़ इ दह् ○

٧- الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۙ

8 इन्नहा अ़लैहिम् मुअ़स्सा दह् ○

٨- اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ

9 फ़ी अ़मा दिम् मु मद्दा दह् ○

٩- فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۙ

No 105 SURAH FEEL (19)
(THE ELEPHANTS)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 5
WORDS 24, LETTERS 94

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Have you not seen how your RABB dealt with the people of elephant (army of Abraha).
2 Did HE not make their trecherous plan go waste?
3 And HE sent against them swarms of 'Aba-beel' birds.
4 Which dropped over them small pieces of stones-of burnt up lava.
5 Then HE destroyed them as if they were a heap of green stalk and straw that has been left over - after been eaten up by the cattle.

नं. 105 सूरह फ़ील (19)
(हाथी)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 5
लफ़्ज़ 24, हरूफ़ 94

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायते रहम वाला है-

1 क्या तुमने देखा नहीं के तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ कैसा किया. (यानी अब्राहा की फ़ौज के साथ).

2 क्या अल्लाह ने उसके दाव बेकार नहीं कर दिये ?

3 और उनके ऊपर झुंड के झुंड अंबाबील नामी परिंदे भेजे.

4 जो उन पर जले हुए लावा की पत्थर की कंकरियां फैंकते थे.

5 फिर उनको इस तरह बरबाद कर दिया जैसे के जानवरों का खाकर रौंदा हुआ हरा चारा और भुसा.

नं॰105 सूरा तुल् फ़ीलि (19)

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ ١٩

मक्की, रूकूअ़ 1, आयात 5
लफ़्ज़ 24, हरूफ़ 94

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 अलम् तारा कैफ़ा फ़ाअ़ाला रब्बुका बि अस्हा बिल् फ़ील ○

١- اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝

2 अलम् यज् अ़ल् कैदा हुम् फ़ी तज़् लील ○

٢- اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝

3 व अर् साला अ़लैहिम् तैरन् अबा बील ○

٣- وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝

4 तर्मीहिम् बि हिजारा तिम् मिन् सिज्जील ○

٤- تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝

5 फ़ जाअ़ाला हुम् कअ़स् फ़िम् मअ़् कूल ○

٥- فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝

No 106 SURAH QURAISH

(THE TRIBE OF QURAISH)(29)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 4
WORDS 17, LETTERS 79

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Because of the security now, to which the tribe of Quraish had become used to.

2 This - due to their firm treaties of peace (with the neighbouring tribes) which now allowed them to conduct safe journeys through both winter and summar seasons.

3 So let them now worship the RABB of this House (i.e. Khana-e-kaabaa)

4 WHO provides them food against hunger and security against fear (of attack).

नं॰ 106 सूरह् क़ुरैश

(क़ुरैश नामी क़बीला)(29)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 4
लफ़्ज़ 17, हरूफ़ 79

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 चूंके अब क़ुरैश क़बीले के लोग अमन चैन के मानूस हो गये थे.

2 ये - उनके अमन के मुहाइदों की वजह से अब बा खैरियत दूसरे मुल्कों में आज़ादी से सरदियों और गरमियों दोनों में सफर करने के मानूस हो गये थे.

3 तो अब इन्हें चाहिये के ये इस घर के (यानी ख़ाना काबा के) रब की बंदगी करें.

4 जो उन्हें भूक से बचा कर खाना देता है और (हमले के) ख़ौफ़ से बचा कर उन्हें अम्न अता करता है.

नं॰106 सूरातु क़ुरै शिन् (29)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 4
लफ़्ज़ 17, हरूफ़ 79

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 लि ईलाफ़ि क़ुरैश ○

١- لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ

2 ईलाफ़िहिम् रिह्लतश् शिताइ वस् सैफ़ ○

٢- اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۚ

3 फ़ल् यअ़्बुदू रब्बा हाज़ल् बैत ○

٣- فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۙ

4 अल् लज़ी अत्अ़मा हुम् मिन् जूअ़िव् व आमाना हुम् मिन् ख़ौफ़ ○

٤- الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ
وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝

No 107 SURAH MAA'OON (NEIGHBOURLY NEEDS)(17)

MAKKI, RUKU1, AYATS 7
WORDS 25, LETTERS 115

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Have you seen him who denies the Day of Judgement?
2 It is he who repulses the orphans (with harshness).
3 And does not encourage others to feed the needy.
4 So woe to such who pray.

5 Who are neglectful of prayers

6 Those who pray - only to be seen by others.

7 And who refuse to provide (or lend) even the small neighbourly needs.

नं.107 सूरह् माऊ़न (17) (पड़ोसियों की ज़रूरतें)

मक्की, रूकूअ़ 1, आयात 7
लफ़्ज़ 25, हरूफ़ 115

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 क्या तुमने उसे देखा है जो सज़ा और जज़ा के दिन को झुठलाता है
2 ये वो ही है जो यतीम को धुतकारता है.
3 और मिसकीन को खाना खिलाने के लिये (लोगों को) तरग़ीब नहीं करता
4 तो ऐसे नमाज़ियों की ख़राबी है.

5 जो नमाज़ की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं.

6 और जो ज़िबादत करते भी हैं तो दिखावे के लिये करते हैं.

7 और जो रोज़ मर्रा के इस्तेमाल की (मामूली) चीज़ों को भी पड़ोसियों को देने में गुरेज़ करते हैं.

नं॰107 सूरा तुल माऊनि (17)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 7
लफ़्ज़ 25, हरूफ़ 115

बिस्मिल्लाहिर रह्मानिर रहीम ○

1 आराअैत लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन ○

2 फ़ ज़ालिक लज़ी यदुअ़्अ़ुल यतीम ○

3 वला य हुज़्ज़ु अ़ला त़आमिल मिस्कीन ○

4 फ़वैलुल लिल मुसल्लीन ○

5 अल्लज़ीना हुम अ़न सलातिहिम साहून ○

6 अल्लज़ीना हुम युराअ़ूना ○

7 व यमनअ़ूनल माऊन ○

بسم الله الرحمن الرحيم

١- أَرَءَيْتَ الَّذِى يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ۝

٢- فَذَٰلِكَ الَّذِى يَدُعُّ ٱلْيَتِيمَ ۝

٣- وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ ٱلْمِسْكِينِ ۝

٤- فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ۝

٥- ٱلَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝

٦- ٱلَّذِينَ هُمْ يُرَآءُونَ ۝

٧- وَيَمْنَعُونَ ٱلْمَاعُونَ ۝

No108 SURAH KOWSAR (15)

(THE FOUNTAIN OF ABUNDANCE)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 3
WORDS 10 , LETTERS 37

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 WE have surely given you The Fountain of Abundance (of goodness and plenty to Muhammad Sal Lal Laahu 'Allehi Wa Sallam)

2 So pray to your RABBand give sacrifice.

3 For it is surely your opponents who will be cut off from the hope of posterity (of children).

नं॰108 सूरह कौसर (15)

(भर पूर निअ़्मतें)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 3
लफ़्ज़ 10 , हरूफ़ 37

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 हमने (यानी अल्लाह ने) आपको (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु को) बहिश्त की ख़ैरो बरकत वाली होज़े कौसर अ़ता कर दी है.

2 तो बस अपने रब की ज़िबादत कीजिये और क़ुरबानी दीजिये.

3 के बेशक़ आपके दुश्मन ही औलाद से महरूम रहेंगे (यानी बेऔलाद रहेंगे)

नं.108 सूरा तुल् कौसरि (15)

मक्की, रकूअ् 1 , आयात 3
लफ़्ज़ 10 , हरूफ़ 37

बिस मिल्लाा हिर् रह्माा निर् रहीम ०

1 इन्नाा अअ् तैनाा कल् कौसर् ०

2 फ़ सल्लि लि रब्बिका वन् हर् ०

3 इन्ना शानि आका हुवल् अब् तर् ६ ०

سُورَةُ الكَوثَرِ مَكِّيَّةٌ (١٥)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝

٢- فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝

٣- اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝

No 109 SURAH KAAFIROON
(THE DISBELIEVERS) (18)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 6
WORDS 26, LETTERS 99

IN THE NAME OF ALLAH
MOST GRACIOUS, MOST
MERCIFUL.

1 (O Messenger!) Tell these Disbelievers of Islam - "O Disbelievers!"
2 I do not worship what you worship (i.e. idols).
3 Nor do you worship WHOM I worship (i.e. ALLAH)

4 And I shall not worship those (idols) which you worship.
5 Nor you are likely to worship that which I worship (i.e. ALLAH).

6 To you is your religion, and to me is my religion.

नं॰ 109 सूरह् काफ़िरून (18)
(काफ़िर लोग)

मक्की, रूकूअ् 1, आयात 6
लफ़्ज़ 26, हरूफ़ 99

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है॰

1 (ऐ पैग़म्बर!) इस्लाम के ना मानने वालों से कह दीजिये- "ऐ काफ़िरो!"
2 जिनको तुम पूजते हो (यानी बुतों को) उनको मैं नहीं पूजता॰
3 और जिसकी (यानी अल्लाह की) मैं ज़िबादत करता हूं, उसकी तुम ज़िबादत नहीं करते॰
4 और मैं उनकी ज़िबादत करने वाला नहीं हूं जिनकी तुम ज़िबादत करते हो॰

5 और ना ही तुम उसकी (यानी अल्लाह की) ज़िबादत करने वाले मालूम होते हो जिसकी मैं ज़िबादत करता हूं॰

6 लिहाज़ा तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन और मेरे लिये मेरा दीन

नं.109 सूरा तुल् काफ़िरून
(18)

मक्की, रुकूअ् 1, आयात 6
लफ़्ज़ 26, हरूफ़ 99

बिस् मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

1 क़ुल् या अय्युहल् काफ़िरून ○

2 लाअ् अअ्बुदु मा तअ्बुदून ○

3 वलाअन्तुम् आबिदूना माअ्
अअ्बुद ○

4 वलाअना आबिदुम् माअ्बद्
बत्तुम् ○

5 वलाअन्तुम् आबिदूना माअ्
अअ्बुद ○

6 लकुम् दीनुकुम् वलिय दीन ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ

٢- لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ

٣- وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ

٤- وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ

٥- وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ

٦- لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۚ

No 110 SURAH NAṢR (114)
(HELP)

MADANI, RUKU 1 AYATS 3
WORDS 19 , LETTERS 81

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 When the help of ALLAH is there and the victory (of mecca city) comes.

2 And you see that men are entering ALLAH'S religion in crowds upon crowds.

3 Then hymn the praises of your RABB and seek HIS forgiveness and HE is ever ready to accept repentance.

नं.110 सूरह् नस्र् (114)
(मदद)

मदनी, रुकूअ् 1 , आयात 3
लफ़्ज़ 19 , हरूफ़ 81

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 जब अल्लाह की मदद आ पहुंचे और फ़तह् (मक्का शहर की) हासिल हो जाये.

2 और तुमने देख लिया के लोग गिरोह के गिरोह होकर अल्लाह के दीन में दाख़िल हो रहे हैं.

3 तो अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो और उससे माफ़ी की दुआएं मांगते रहो. बेशक़ वो तो बड़ा माफ़ करने वाला है.

नं॰110 सूरा तुन् नस्रि (114)

मदनी, रुकूअ़ 1, आयात 3
लफ़्ज़ 19, हरूफ़ 81

बिस् मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम ○

1 इज़ा जाआ नस्रुल् लाहि वल् फ़त्ह् ○

2 वरा अैत तन् नासा यद् खुलूना फ़ी दीनिल लाहि अफ़्वाजा ○

3 फ़ सब्बिह् बि ह्मदि रब्बिका वस् तग़् फ़िरह् ○ इन्नहू काना तव् वाबा ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ

٢- وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ

٣- فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۙ

No 111 SURAH LAHAB (6)

(THE FATHER OF FLAME)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 5
WORDS 24, LETTERS 81

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 Destroyed are the hands of Abu Lahab and he will perish.
2 His wealth and whatever he had acquired was of no profit to him.
3 Soon he will be burnt in the blazing Fire.
4 And along with him his wife too who carries on her head fire wood (i.e. she is a mischief monger)

5 And she will have a coir of rope around her neck.

नं॰ 111 सूरह् लहब (6)

(आग में जलाया जाने वाला)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 5
लफ़्ज़ 24, हरूफ़ 81

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 अबू लहब के हाथ टूट गये (यानी कमज़ोर हो गये) और वो हलाक (यानी बरबाद हो गया.
2 ना तो उसका माल ही उसके कुछ काम आया और ना ही उसकी कमाई.

3 वो जल्द ही भड़कती हुई आग में डाला जायेगा.
4 और उसके साथ उसकी बीवी भी जो जलाने की लकड़ियां अपने सर पर उठाये फ़िरती है. (यानी लगाई बुझाई करती फ़िरती है).

5 और उसके गले में खूब बटी हुई (यानी मज़बूत) रस्सी होगी.

नं॰ 111 सूरा तुल् लहबि (6)

سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 5
लफ़्ज़ 24, हरूफ़ 81

बिस् मिल्लाहि र्रह्मानि र्रहीम ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 तब्बत् यदा अबी लाहा बिंव् व तब्ब् ○

١- تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝

2 मा अग़्ना अ़न्हु मा लुहू वमा कसब् ○

٢- مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝

3 स यस्लानारन् ज़ाता लहब् ○

٣- سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝

4 वम्रा अतुह् ह़म्मालत़ल् ह़त़ब् ○

٤- وَّامْرَاَتُهٗ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝

5 फ़ी जीदिहा ह़ब्लुम् मिम् मसद् ○

٥- فِىْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝

No 112 SURAH IKHLAAS (22)
(PURE FAITH)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 4, WORDS 17, LETTERS 49

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 (O Messenger!) Say: HE is ALLAH, the One and the only.

2 HE is ALLAH, the Eternal, the Absolute.

3 HE does not beget nor is HE begotten.

4 And there is none who is comparable to HIM. (or equal in rank to HIM).

नं. 112 सूरह इख़्लास (22)
(ख़ालिस अ़क़ीदा)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 4, लफ़्ज़ 17, हरूफ़ 49

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 (ऐ पैग़म्बर!) आप कहिये के: वो अल्लाह है, एक है, यक्ता है.

2 वो अल्लाह है - सबसे बे नियाज़.

3 उसके कोई औलाद नहीं, और ना ही वो किसी की औलाद है.

4 और ना ही कोई उसके जैसा है. (या साथी है).

नं॰112 सूरा तल् इख़ लासि
(22)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 4,
लफ़्ज़ 17, हरूफ़ 49

बिस् मिल्ला हिर् रह्मा
निर् रहीम ○

1 क़ुल् हु वल् लाहु अहद् ○

2 अल्ला हुस् समद् ○

3 लम् य लिद् व लम्
यूलद् ○

4 व लम् य कुल्लहू कुफ़ु वन्
अहद् ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝

٢- اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝

٣- لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝

٤- وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

No 113 SURAH FALAQ (20)
(THE DAWN)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 5
WORDS 23, LETTERS 73

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL.

1 (O Messenger!) Say: I seek refuge with the RABB of the dawn.
2 And from the mischief of the things which HE has created.
3 And from the mischief of the darkness as it covers all.
4 And from the mischief of those who practice witch-craft (or magic by blowing over knots of ropes).
5 And from the mischief of the envier when he envies.

नं॰ 113 सूरह् फ़लक़ (20)
(सुबह् सादिक़)

मक्की, रुकूअ् 1, आयात 5,
लफ़्ज़ 23, हरूफ़ 73

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 (ऐ पैग़म्बर!) आप कहिये के: मैं सुबह सादिक़ के रब की पनाह मांगता हूं.
2 और हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है.

3 और अंधेरी रात की बुराई से जब अंधेरा चारों तरफ़ छा जाये.

4 और जादू टोटका करने वालों की बुराई से (जो रस्सी की गांठों पर पढ़ पढ़ कर फूंकते हैं).

5 और हसद करने वाले की बुराई से जब वो हसद करने लगे.

नं.113 सूरा तुल् फ़ालाक़ि
(20)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 5
लफ़्ज़ 23, हरूफ़ 73

बिस् मिल्लाहि र्रह्मानि र्रहीम ○

1 क़ुल् अऊ़ज़ु बि रब्बिल् फ़लक़् ॥○

2 मिन् शर्रि मा ख़लक़् ॥○

3 व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा वक़ब् ॥○

4 व मिन् शर्रिन् नफ़्फ़ासाति फ़िल् अ़ुक़द् ॥○

5 व मिन् शर्रि ह़ासिदिन् इज़ा ह़सद् ६○

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ (١١٣) (٢٠)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

١- قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝

٢- مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝

٣- وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝

٤- وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۝

٥- وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

No 114 SURAH NAAS (21)
(THE MANKIND)

MAKKI, RUKU 1, AYATS 6, WORDS 20, LETTERS 81

IN THE NAME OF ALLAH MOST GRACIOUS, MOST MERCIFUL

1 (O Messenger!) Say: I seek refuge with the RABB of mankind.
2 With the King of mankind.
3 With ALLAH of mankind.
4 From the mischief of the Whisperer Shaitaan who breathes temptations into the minds of men again and again and then (hearing the name of ALLAH) withdraws.
5 Who suggests evil thoughts into the hearts of mankind.
6 Whether they be from amongst the jinns or from amongst the men, (I seek refuge with ALLAH from the mischief of these all).

नं·114 सूरह नास (21)
(मख़लूक़ इंसान)

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 6, लफ़्ज़ 20 हरूफ़ 81

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है.

1 (ऐ पैग़म्बर!) आप कहिये के: मैं पनाह मांगता हूं इंसानों के रब की.
2 इंसानों के बादशाह की.
3 लोगों के हक़ीक़ी मज़बूद की.
4 उस शैतान की बुराई से जो इंसानों के दिलों में वस् वसे डालता है और (अल्लाह का नाम सुन कर) पीछे हट जाता है.
5 शैतान जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता है.
6 वो चाहे जिन्नों में से हों या इंसानों में से (इन सबकी बुराइयों से) मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं.

नं. 114 सूरा तुन् नासि (21)

١١٤ سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ ٢١

मक्की, रुकूअ़ 1, आयात 6,
लफ़्ज़ 20, हरूफ़ 81

बिस् मिल्लाहि र्रह्मानि र्रहीम ०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

1 क़ुल् अऊ़ज़ु बि रब्बिन् नास ०

١- قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ

2 मलि किन् नास ०

٢- مَلِكِ النَّاسِ ۙ

3 इलाहि न् नास ०

٣- اِلٰهِ النَّاسِ ۙ

4 मिन् शर्रिल् वस् वासिल् ख़न्नास ०

٤- مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ

5 अल् लज़ी यु वस् विसु फ़ी सुदू रिन् नास ०

٥- الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ

6 मिनल् जिन्नति वन् नास ६ ०

٦- مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۙ

सादा क़ल्लाहु ल् अ़ज़ीम
व सादाक़ा रसूलु हुन् नबिय्युल् करीम.

नोट:- ये 30 वां पारा है. इसके अ़लावा बाक़ी 29 पारे भी इसी तरह प्रिंट होने के लिये तय्यार हैं.

अ़ब्दुल् वहीद ख़ाँ
अल्लाह का ग़ुलाम